आरती

ओ३म जय जम्भ गुरु देवा, स्वामी जय जम्भ गुरु देवा ।
जय जय जग पालक, गुरु फल मुक्ति देवा ।।टेर।।
ओ३म जय जम्भ देव, जय जम्भ देव ।
लोहट पुत्र हँसा सुत, महिमा अति भारी ।
ताप सन्ताप मिटाओ, संकट सब हारी ।।1।। ओ३म जय
बाल समय में गुरु जी, तुमने मौन कियो।
देवन स्तुति किन्हीं तब ही तोड़ दियो ।।2।। ओ३म जय ...
विक्रम पन्द्रह सौ बिंयाळै, बिष्नोई पंथ चलाये ।
कारज कठिन संवारे, प्रभु सन्तन के मन भाये ।।3।।
कैद हुए हासम कासम, भारी सोच भयो ।
पल में कैद छुड़ाई, सब दुःख दूर कियो ।।4।।
धाम मुकाम में शौभित, दर्षन अति भारी ।
अमावस फागण आसौज में लागै, मेला हर बारी ।।5।। ओ३म जय
श्री जम्भ गुरु जी की आरती, जो कोई सेवक जन गावै।
पृथ्वीसिंह षरण गुरु की, मन वान्छित फल पावै।।

आरती

ओ३म जय गुरु देव हरे, स्वामी जय गुरु देव हरै ।।
भगत हेत श्री विष्णु जी, भिन्न भिन्न रूप धरै ।।टैक।।
मत्सय रूप धर आये, प्रभु वेदो पै ध्यान दियो।
सत्यव्रत राजा को , वेदों का ज्ञान दियो।।1।। ओ३म जय..
कच्छ रूप धर कर, प्रभु सागर मंथन हारी ।
अमृत रत्न सागर में पाये, सबक कारज सारी ।।3।। ओ३म जय ...
वराह रूप धर आये, पृथ्वी दन्त पर धारी।
दानव हिरणाक्ष संहारै, सन्तन हितकारी ।।4।। ओ३म जय ...
नृसिंह रूप धारण किन्हों, भक्त प्रह्लाद उबारा ।
दैत्य भारी हिरणाकुष, प्रभु आन आप संहारा ।।5।। ओ३म जय ...
वामन रूप धर आये, प्रभु बलि राजा चैतायो ।
सकल ब्रह्माण्ड लेकर, पाताल बलि पहुँचायो ।।6।। ओ३म जय .
परशुराम होय क्षत्रिपन साध्यो, भक्त हेत ले अवतारा ।
कर पाप हरण धरणी का, दुष्ट क्षत्रिय सब संहारा ।।7।। ओ३म जय ...
रावण कुल संहारण को, रघुनन्दन रूप धरे ।

लाल कौशल्या बन आये, ऋषियों के काज सरे ।8। ओ३म ...
चक्र सुदर्शन धर कर आये, कँश दुष्ट संहारी ।
गीता ज्ञान दियो जग को, भव बन्धन हारी।।9।।ओ३म जय ...
बुद्ध रूप गयासुर मार्‌यो, प्रभु हृदय प्रकाश कियो ।
पावन जन बनाया, सुख शान्ति सन्देष दियो ।।10।। ओ३म ...
कलीकाल जम्भगुरु आये, पीपासर अवतार लियो ।
हरि कंकैहड़ी मण्डपमेड़ी, सम्भराथल प्रचार कियो ।।11।। ओ३म जय ..
दशम रूप प्रभु जी, निकंलक रूप धारे ।
"पृथ्वीसिंह" नवण गुरु को, जो सबके रखवारे ।।12।। ओ३म ...

आरती

ओ३म जय अमृता माता, मैय्या जय अमृता माता ।
तुमरो नाम लेत ही, दृष्य खेजड़ली रा आता ।। टेर।।
पूरण समर्पित दयामय, माता तू अमर बलिदानी ।
विष्णु धाम मिलंता , बण गई माता पूज्या राणी ।।1।।
ओ३म तुम हो सर्व गुण सम्पन्न, जम्भ सतगुरु की चेली ।
सर्वस्व वार दिया, रूँखा हित अपनी गर्दन मेली ।।2।। ओ३म जय ...
तेरा करै अनुकरण, माता थारी तीनों कन्याएं ।
कर दर्षन नारायण, नियम रूँख रक्षा रा निभावै ।।3।। ओ३म.
तुम हो बिश्नोई गौरव, रग रग जोश भर्‌या ।
खुल गये दिव्य चक्षु, जब वीर बलिदान कर्‌या ।।4।।
दीन दयालु अमृता माता, रूँखा री हितकारी ।
हंसते हंसते दी कुर्बानी, थारी मुख शोभा न्यारी ।।5।। ओ३म
वीर भोम खेजड़ली विराजै, रूँखा रा रखवाला ।
शहीद स्मारक साजै, मेला खेजड़ली वाला ।।6।। ओ३म जय....
खेजडली में अमृता रो वासो, जीवां रा पालन कर्ता।
हिरणा री रक्षा करता, सब जीवां रा दुःख हर्त्ता ।।7।। ओ३म
अमृता माता जी री आरती, जो कोई वीर सेवक गावै।
"पृथ्वीसिंह" राख धर्म नै, श्री विष्णु दर्शन पावै ।।8।। ओ३म जय ...

पृथ्वीसिंह बैनीवाल बिश्नोई,
संस्थापक सदस्य, जाम्भाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर तथा संयुक्त सचिव एवं प्रैस प्रभारी,
श्री बिश्नोई सभा, पंचकूला, सैक्टर–15, पंचकूला–134113 (हरियाणा)–094676.94029